अंतरा-शब्दशक्ति

मातृभाषा.कॉम

वैचारिक महाकुम्भ

भाग-२

मातृभाषा को समर्पित साझा काव्य संग्रह

सम्पादक-डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

www.matrubhashaa.com

मातृभाषा.कॉम (भाग-2)

(मातृभाषा को समर्पित साझा काव्य संग्रह)

संपादक

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-53-6

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय- १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

मूल्य- ४०.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Matrubhashaa.com (patr-2) Edited By Dr. Arpan Jain 'Avichal'

वैधानिक चेतावनी- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

संपादक की पाती

हिन्दी भाषा के प्रचार हेतु प्रतिबद्ध मातृभाषा.कॉम का दूसरा प्रयास

किसी राष्ट्र के नवनिर्माण में विचारक्रांति का अहम् योगदान है, जो भाषा के रथ पर आरूढ़ होकर राष्ट्र निर्माण हेतु अग्रसर है। वर्ष २०१६ की शीत के दौरान हिंदी के प्रचार और प्रसार हेतु एक ऊर्जा दीप्ती प्रज्वलित हुई जिसका नाम 'मातृभाषा.कॉम' बनकर नवोदित और स्थापित रचनाकारों के बीच रचना के प्रकाशन के साथ-साथ पाठकों तक पहुँचाने वाला साहित्य सेतु बना। मातृभाषा.कॉम जो महज एक अंतरताना से निकल कर हिन्दी भाषा के प्रसार और राष्ट्रभाषा बनाने के आंदोलन में परिवर्तित हो गया। अनथक परिश्रम के परिणाम स्वरुप मातृभाषा.कॉम वर्तमान में हिन्दी के रचनाकारों में जाना-पहचाना नाम बन गया। भारत की सांस्कृतिक अखंडता की चिंता को आंदोलन का स्वरुप देकर वर्ष २०१८ की जनवरी-फरवरी में दिल्ली के प्रकाशन के सहयोग से प्रथम बार मातृभाषा.कॉम ने अपने पहले साझा संग्रह को तैयार किया जिसमें हिन्दी के रचनाकारों का हिन्दी प्रेम यानि कि हिन्दी भाषा के महत्व पर काव्य सृजन को प्रकाशित किया।

वैसे तो वर्तमान में किताबों को पढ़ने वाले पाठक खोजने पर मलाल हाथ लगता है, परन्तु इस दिशा में कार्यरत संस्थान अपने प्रयासों से लेखक और पाठकों के बीच सेतु बनने का कार्य कर रहे है। सत्य तो यह है कि यदि साहित्य आलोक में जनता की पीर या विचारक्रांति नहीं आई तो राष्ट्र की सांस्कृतिक चूल हिल जाएगी।

काव्य सृजन जब भारतीय समाज में हाशिये का विषय माना जाने वाला तथ्य बनने लगा तब ऐसे दौर में संस्थान के प्रयास से साझा संग्रह के रूप में श्रेष्ठ काव्य को पाठक दीर्घा तक पहुँचाने का प्रयास जारी है। भाषा के प्रचार हेतु वफ़ादारी के साथ मातृभाषा उन्नयन संस्थान के लक्ष्य जिसमें हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का भाव भी निहित है उसे ध्यान में रखकर मातृभाषा.कॉम के द्वितीय भाग

में हिन्दी के प्रचार और महत्त्व सम्बंधित काव्य पुष्पों को संकलित किया गया है।

इसी तारतम्य में वर्ष २०१९ के शीत में अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन के सहयोग से इसी तरह का हिन्दी भाषा के महत्व को दर्शाता द्वितीय काव्य संग्रह आपके हाथों में पहुंचा कर मातृभाषा.कॉम हर्षित भी है और उत्साहित भी।

इस संग्रह में बड़े रचनाकारों के व्यामोह से बाहर निकलकर, रचना की समृद्धता का विशेष दर्शन है, जो भारतीय नवलेखन का भविष्य भी दर्शा रहा है। लगभग २५ से अधिक रचनाकारों ने अपनी कलम से हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु हिन्दी के महत्व को निष्पादित किया जिसे हमने संयोजित किया आप पाठकों के लिए। चूँकि वर्तमान में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि यही एकमात्र ऐसी भाषा है जो राष्ट्र की ४० प्रतिशत से अधिक लोगो की प्रथम भाषा है। जिसे लगभग ५० करोड़ लोग बोलते है और जनभाषा के तौर पर सम्पूर्ण राष्ट्र में स्वीकार्य है। इसी उद्देश्य की सार्थकता के लिए काव्य के माध्यम से उसके महनीय महत्त्व और स्वीकार्यता को संयोजित किया है।

मुझे विश्वास है कि यह काव्य संग्रह आंदोलन का अग्निधर्मा गीत बनेगा, और इसी तरह आप पाठकों का स्नेह मातृभाषा.कॉम को हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

जय हिन्द-जय हिन्दी

डॉ अर्पण जैन 'अविचल'

संस्थापक एवं संपादक

मातृभाषा.कॉम

अनुक्रमणिका

1. मेरी हिन्दी माँ/डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई 7
2. राष्ट्रभाषा/डॉ. उपासना पाण्डेय 8
3. राजमहिषी/ पूनम (कतरियार), बिहार 9
4. मेरी प्यारी हिंद/नवनीता कटकवार 10
5. मेरी माता हिन्दी/डॉ० ऋचा त्रिपाठी 11
6. हिन्दी भाषा का महत्व/श्रीमती शशिकला व्यास 12
7. हिन्दी का सम्मान करें/नीरजा मेहता 'कमलिनी' 13
8. हिन्दी का अपमान क्यों/धनराज वाणी जोबट 14
9. हिन्दी का महत्व/नीता त्रिपाठी 15
10. हिन्दी/अनिता मंदिलवार सपना 16
11. देश की है शान हिन्दी/नरेंद्रपाल जैन 17
12. हिन्दी/शिखा सिंह 'भारद्वाज' 18
13. हिन्दी-वन्दन/डी. कुमार-अजस्र 19
14. हिन्दी की बिंदी में शान/रिखब चन्द राँका 'कल्पेश' 20
15. राष्ट्र भाषा की गरिमा/डॉ वासिफ क़ाज़ी इंदौर 21
16. मेरी भाषा मेरी पहचान..!/डॉ वन्दना गुप्ता 22
17. हिन्दी का पता/अशोक महिश्वरे 23
18. हिन्दी-माथे की बिंदी/आरती तिवारी 24
19. भारत माता की शान/प्रीति हर्ष 25
20. हिन्दी भाषा/अदिति रूसिया 26

21. हाँ… फिर एक बार/रिंकल शर्मा 27
22. हिन्दी के महापुजारी/वसुंधरा राय 28
23. हमारी हिन्दी/उर्मिला मेहता 29
24. हिन्दी मेरी भगिनी/प्रिया एस. प्रसाद 'प्रियायश' 30
25. हिन्दी की दिव्यता/अंजलि वैद 31
26. मातृभाषा/वर्षा अग्रवाल 32
27. हिन्दी है आन मेरी/मीनाक्षी सुकुमारन 32

मेरी हिन्दी माँ

मेरी हिन्दी माँ!
तुम चिंतित न होना
राजभाषा से राष्ट्रभाषा तक
तुम्हारी इस यात्रा के लिए,
तुम्हारे सम्मान के लिए
तुम्हारे स्वाभिमान के लिए
हर भारतीय
निकल पड़ा है
मैदान में...!
हिन्दी सेवकों,
हिन्दी कवि सम्मेलन के सारथियों,
भाषा सारथियों,
संगणक योद्धाओं की फौज
हो चुकी है तैयार....!
पहले
माँ हिन्दी के लिए
अपने-अपने तरीके से
अपनी अंतिम साँस तक
लड़ते रहे तुम्हारे पुत्र,
कभी हारने भी लगे
तो फिर तैयार हुए
अपने शस्त्रों के साथ
इसका इतिहास साक्षी है...!!
उन्हीं योद्धाओं से
प्रेरणा लेकर
सजा लिए हैं
तरकस में सबने
अपने-अपने तीर,
थाम ली है कमान
अपनी योजनाओं की,
थाम लिया है ध्वज
हिन्दी के सम्मान का
स्वाभिमान का...!!!
अब देखना तुम
ये यात्रा
ये युद्ध तभी रुकेगा
जब राष्ट्रभाषा के पद पर
माँ हिन्दी शोभित होगी...!!!
तब तक
तेरे पुत्र-पुत्रियाँ
थके बिना
तेरे लिए अहर्निश
काम करते रहेंगे...!!!!
तुम चिंतित मत होना
मेरी हिन्दी माँ.....!!!!!

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई
देहरादून

राष्ट्रभाषा

सहसा एक प्रश्न मस्तिष्क में कौंधा !
जिसने अन्दर तक हृदय को कचोटा !
हिन्दी हमारी मातृभाषा है...
विश्व की सबसे सुन्दर लिपि..
विश्व की सरलतम भाषा है..
जैसे बोली वैसी जाती लिखी..
यह तो एक बहती नदी के समान,
अपनी शब्दधारा से बनाती पहचान ।
अन्य भाषाओं का करती सहज स्वागत,
साथ में इसके वृहद् प्राचीन विरासत।
फिर हमें क्यों पड़ता "हिन्दी दिवस" मनाना ?
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, यह बताना !
अपने घर में ही यह क्यों उपेक्षित,
क्या हिन्दी पढ़ने वाला नहीं है शिक्षित ?
हिन्दी की ऐसी दयनीय अवस्था
वस्तुतः नहीं हुई अकारण !
कारण है वह प्रत्येक व्यक्ति,
जिसे नहीं पता स्वभाषा में
सहज अभिव्यक्ति की शक्ति !
दूसरों से पहले स्वयं करो सम्मान !
स्वराष्ट्र-भाषा की महानता का मान ।

डॉ. उपासना पाण्डेय
भिवाड़ी, राजस्थान

राजमहिषी

राजभाषा का जो सम्मान दिया है
राजमहिषी-सा अभिमान हुआ है।
अपभ्रंश की गलियों में जन्म हमारा,
मागधी-अर्धमागधी से पल्लवन हमारा.
कई-कई बोलियों के हाथों को थामें,
अवधी-ब्रज आदि भाषाओं को पछाड़ें.
हारी नहीं जब मैं क्लिष्ट परिस्थितियों में
ये अंग्रेजी बिदेसन मेरा क्या बिगाड़े?
सत्ता के गलियारे में कड़ा संघर्ष हमारा,
विरोध का झंझावात भी मुझसे है हारा.
मैं मन की अभिव्यक्ति,जन के विचार हूं,
भारत की सभ्यता-संस्कृति - व्यवहार हूं
मैं वैश्विक -भारत की ओर चल रही.
समय के साथ-साथ हूं,आगे भी बढ़ रही,
विभिन्नता के देश को बांधे रखूं सदैव,
राजधर्म को अपना निभाते चलूं सदैव .
च्युत न हो सकूं अपने 'कर्तव्य' से कभी,
मुख न मोड़ सकूं अपने 'दायित्व' से कभी.
हर भारतीय को हो अभिमान मुझसे
भारत की हो सदा पहचान मुझसे
है इल्तिज़ा यही, अरमान है यही
हिन्दुस्तान की हो अक्षुण्ण शान मुझसे.,...!

पूनम (कतरियार)
बिहार

मेरी प्यारी हिन्दी

हिन्दी मेरी राजभाषा।
हिन्दुस्तान मेरी पहचान।
लगती है मुझको
हिन्दी संस्कृत सखी सखी,
एक की नीव दुसरे ने रखी।
उच्च वर्ग की एक भाषा
जिसमे सब एक है,
आप हो या तुम,
सब you ही होते है।
हिन्दी आम जन की बोली है।
है भेद इसका बड़ा विशाल
हिन्दी इन भेदो को मानती है।
अपने शब्दों में सम्पूर्णता को जानती है।
ये चंद पंक्तियों में ही,
बड़ी बड़ी बाते बखानती है।
हिन्दी न होती तो,
माँ,कब की 'mummy' हो गयी होती,
और पिता होते 'dead'।
मौसी का प्यार भरा सम्बोधन
कहाँ माँ जैसी कहलाता,
आंटी में ही खो जाता।
प्रातः काल कहाँ राम नाम मुख में आता।
राधे राधे कहीं खो जाता।
हिन्दी भारत के गौरव
व राष्ट्रीय एकता को पहचान देती है
मेरे देश की हिन्दी है शान।
हमारे देश की संस्कृति इतिहास
क्रांति से,
यही पहचान कराती है।
हिन्दी स्वायत्ता की रक्षक बन
हमें शक्ति देती जाती है।
अनेक राज्य नाना भाषा
हिन्दी अपनापन लिए हुए
अनेकता में एकता को कायम रखती जाती है।
भावनाओ, विचारो, तर्क,
वितर्को को दर्शाने के लिए,
पारदर्शी दर्पण है हिन्दी।
है हिन्दी मेरे देश की बिंदी।
अब तो हिन्दी का डंका,
विदेश में भी बज रहा है।
मेरे देश की राजभाषा हिन्दी का
विश्व में उच्च स्थान बन रहा है।
हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार के,
विशाल यज्ञ में हम भी एक आहुति देते है।
विस्तार हो हिन्दी का सारे जग में,
यही प्रण लेते है |

नवनीता कटकवार
बालाघाट (म.प्र.)

मेरी माता हिन्दी

हिन्दी अपनी बोली है, हिन्दी अपनी मातृभाषा ;
बिन माँ के अस्तित्व जीव का कभी नहीं रह पाता ।
माता से ही जीव जगत में,पूजनीय बन जाता ;
बिन माँ के होने पर ही वह अनाथ कहलाता ।।

ही है, कण - कण में व्याप्त सदा रहती,
पीयूष स्रोत सी रहती है, जीवन के मरुस्थल में बहती ।
यदि हिन्दी न होती तो मेरा अस्तित्व नहीं होता ;
रहते भी यदि तो हमको स्वास्तित्व बोध नहीं होता ।।

जैसे माँ का दुग्धपान कर,पोषण पा हम सबल हुए,
वैसे ही हिन्दी जननी जीवन में प्रतिपल रस भरती रहती।
उसने ही देखो दिया ज्ञान, प्रथमाक्षर से स्वबोध पर्यन्त ;
जैसे नहीं उऋण हो सकते मातृऋणों से हम मनुवंशज,
वैसे ही हम आभारी हिन्दी के सदा मृत्यु पर्यन्त।।

सभी ज्ञान का माध्यम हिन्दी, हिन्दी ही मेरा जीवन,
जीवन बिना नहीं रह जाता, प्राणों का यह दिव्य संचरण ।
गर्भस्थ दशा से ही जिस हिन्दी, माँ का हमने श्रवण किया,
उसके द्वारा ही बचपन सिञ्चित, उसी से यौवन मुखरित ;
हे माँ जीवन तुम्हें समर्पित, शत - शत बार नमन अर्पित ।।

डॉ० ऋचा त्रिपाठी
बैंगलोर कर्नाटक

हिन्दी भाषा का महत्व

कोटि कोटि नमन करूँ अपनी मातृभाषा हिन्दी को
आन-बान-शान हमारी खुद की पहचान है हिन्दी भाषा हमारी ।
नित नये भाषाओं का ज्ञान लेकर उन्मूलन उन्नति कराती है
बिन भाषा के ज्ञान ना मिलता हृदय भेदी उसूल
आजादी के दीप्ती मंडल में बहुआयामी विशाल संग्रहो में
सहृदयता से सहिष्णुता से शब्दों में पिरोकर निखर जाता है।
देश विदेश में भी बोली जाने वाली भाषा गणमान्य व्यक्तियों में
शामिल हो वेद - वेदांत,ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद रचनाओं में रचे गए हैं।
उपन्यासों,ग्रन्थो,विधाओं में भी मातृभाषा गढ़े गये हैं
आम आदमी की जुबान पर स्वाभिमान जगाये जाते हैं।
देश की गरिमा,गौरव बढ़ाकर सबकी निगाहें टिकाये हुए हैं
हम सभी देशवासियों के निश्छल प्रेम से स्वीकारते हुए चले आये हैं।
सहज,सुँदर,सुघड़ शब्दों में अपनी महिमा बनाए हुए भाषा सरल बन जाती है
मांगें पूरी दुनिया से न्याय आज,
कल की और भविष्य की जन-जन तक पहुंचाने की है।
हिन्दी साहित्य के हरेक क्षेत्र में बोलकर लिखकर कुछ हिन्दी का मान बढ़ाते हुए
देश को बहुमुखी प्रतिभाओं के सोपानों में अग्रसर कर मान सम्मान बढ़ाये हैं।
आओ मिलकर दृढ़ संकल्प करें जनहित में जारी करते हुए हिन्दी मातृ भाषा को
लोगों तक पहुंचायें।

श्रीमती शशिकला व्यास
भोपाल (म.प्र.)

हिन्दी का सम्मान करें

अ से ए तक, क से के तक
हिन्दी से हिंगलिश तक

माँ से मॉम तक
पिता से डैड तक

लड़के बने ड्यूड
लोग बने गाइस

कहाँ गयी हिन्दी
कहाँ गयी अंग्रेज़ी

मॉडर्न बनने की होड़ में
खो गए शब्दों के फेर में

न हिन्दी अपनायी
न अंग्रेज़ी ही आई।

हिन्दी के क ख ग
अब नहीं याद किसी को

हिन्दी के आभार, क्षमा
अब नहीं भाये किसी को

हिन्दी के मास, तिथि हो गए लुप्त
हिन्दू संस्कृति अब हो रही सुप्त

मिलकर बढ़ाएं एक ठोस कदम
हिन्दी को करें सब हृदयंगम

आवश्यकता है जागरूकता की
लें वचन हिन्दी के मान बढ़ाने की

वक़्त था तब, जब अंग्रेज़ भगाए
ज़रूरत है अब, तो अंग्रेज़ी हटायें

परतंत्रता नहीं, स्वतंत्रता जताएँ
हिन्दू हैं हम, अब हिन्दी अपनाएँ

हिन्दी को अपनी आदत बनाएं
हिन्दी को अपनी पहचान बताएं

राष्ट्रभाषा हिन्दी का सम्मान करें
आज से हिन्दी में हस्ताक्षर करें।

नीरजा मेहता 'कमलिनी'
गाज़ियाबाद (उ.प्र.)

हिन्दी का अपमान क्यों

कर्ता 'ने' कर्म' को
सम्प्रदान 'के लिये'
कारकों की त्रुटि से
सारे अर्थ बदल जाते हैं
छोटे-छोटे अल्पविराम से
सब धोखा खा जाते हैं
स,श,ष का चक्कर तो
समझ में कम ही आता है
उ,ऊ की मात्राओं में
शिक्षक भी उलझ जाता है
हिन्दी,बिंदी,चंद्रबिंदु
अब उपहास लगते हैं
हिंग्लिस के इस युग में
सबको बकवास लगते हैं
शुद्ध हिन्दी बोलने वाले
अब कम ही मिलते हैं
अंग्रेजी में हस्ताक्षर कर
खुद को बड़ा समझते है
लेकिन कठिन नहीं है यह
तुम्हारा ज्ञान अधूरा है
लेखन की त्रुटियों से
उसका सम्मान अधूरा है
'माँ'को 'माँ' कहकर देखो
आँचल में दूध भर आता है
पिताश्री की परम्परा से
अश्रु प्रेम का छलक आता है
दादा,दादी,भैया,बहना
सब कुछ अपना लगता है
वंदन,गुरुवर के आदर्शों से
धरती पर स्वर्ग लगता है
संस्कृत,हिन्दी की जननी
अलंकारों ने श्रृंगार किया
रामायण के दोहा,चौपाई
वेदों ने भी स्वीकार किया
हिन्द,हिन्दी,हिंदुस्तान से
अपनी एक पहचान बनाओं
अपनी जिव्हा पर हिन्दी लाकर
विश्व मे हिन्दी का मान बढ़ाओ,..!

धनराज वाणी
जोबट, जि. अलीराजपुर (म.प्र.)

हिन्दी का महत्व

हिन्दी बने राष्ट्रीय भाषा,
पूरित हो मन की अभिलाषा,
शब्द - शब्द जिसका हो अनुपम,
जन-जन जागृत हो निज-भाषा ।।

मातृभूमि का मान बढ़ाए,
संस्कार के भाव जगाए,
पूरा देश समाहित इसमें,
विविध भाव का रस बरसाएँ ।।

वसुधा के कण-कण में हिन्दी,
राष्ट्राभिव्यक्ति की ये संजीवनी,
निज-संस्कृति की यह परिचायक,
सरल, सुबोध, साहित्य-सहायक।।

सब भाषाओं से बढ़कर है,
हिन्दी भाषा की परिपाटी,
हिन्दी बने राष्ट्र की बिन्दी,
आलोकित हो देश की माटी ।।

अलंकार, रस, छन्द प्रत्ययी,
हिन्दी के विशाल सागर में,
पर्यायवाची, वर्ण, मुहावरे,
हिन्दी-भषा के आँचल में ।।

निज-भाषा में ज्ञानार्जन कर,
पोषित करें मातृभाषा को,
भाव जगाएं जन-मानस में,
क्रान्ति गीत हिन्दी में गा कर ।।

आओ लें संकल्प हम सभी
हिन्दी का उत्थान करेंगे,
दिशा-भ्रमित मानुष के मन में,
हिन्दी के प्रति भाव भरेंगे ।।

मानव जीवन के हर पथ में,
हिन्दी का अपना महत्व है,
भाव-ब्यक्त करनें में सक्षम,
बोधगम्य अति सहज-सरल है ।।

नीता त्रिपाठी, दिल्ली

हिन्दी

सभी को बाँधती
एक डोर में
वो अपनी भाषा
वो अपनी भाषा, वो है हिन्दी-----2

हर भाषा को सगी मानती
अपनी बहना जैसी
वो रखती है आशा
वो रखती है आशा, वो है हिन्दी---2

आपस में पहचान बनें
एक दूसरे की
उसकी यही साधना
उसकी यही साधना, वो है हिन्दी--2

तत्सम, तद्भव,देशज
सबको है अपनाती
वह मन को भाती
वह मन को भाती,वो है हिन्दी---2

जो जन जन की बोली
सबकी है हमजोली
जो बने सबका संगम
जो बने सबका संगम, वो है हिन्दी-2

पूरब पश्चिम, उत्तर दक्षिण
जैसे गंगा की धारा
साथ मिलाती है सबको
साथ मिलाती है,....वो है हिन्दी---2

हिन्दी बने राष्ट्रभाषा
और जन जन की भाषा
सपना का है सपना
सपना का है सपना वो है हिन्दी---2

अनिता मंदिलवार सपना, अम्बिकापुर (छ.ग.)

देश की है शान हिन्दी

देश की है शान हिन्दी, है हमारी आन हिन्दी,
पर्व है त्योहार है, धड़कनों का गान हिन्दी।

माँ का दर्जा है मिला तुम हो हमारी आत्मा,
लहराई जग में पताका हो रही विश्वात्मा।
मन की है मुस्कान हिन्दी, है हमारा मान हिन्दी,
विश्व के भाषा पटल पर, एक अलग पहचान हिन्दी। देश की है.....

माँ यदि संस्कृत रही तो और भाषा बेटियाँ,
ये हमारी भूख है तो ये हमारी रोटियां।
एक संविधान हिन्दी, एक है परिधान हिन्दी,
मन से मन की बात कह दें, एक है वरदान हिन्दी। देश की है...।

मंदिरों की घण्टियाँ तो शंख का भी नाद है,
भेद जाति के बिना सब में ही निर्विवाद है।
वाणी का रसपान हिन्दी, देश का गुणगान हिन्दी,
संस्कृति के बीज वाले, खेत का है धान हिन्दी। देश की है.....

है तू भारत की शुभंकर, तुझसे पहली प्रीत है,
भावों का स्वर्णिम कलश है, आरती है गीत है।
राग लय और तान हिन्दी, राष्ट्र का उत्थान हिन्दी,
आने वाला कल है तेरा, आज का आह्वान हिन्दी। देश की है.....

नरेंद्रपाल जैन, ऋषभदेव (राज.)

हिन्दी.... हिन्दी.... हिन्दी

हिन्दी नीरस नहीं सरस है
हिन्दी प्रलय नहीं सृजन है
हिन्दी वियोग नहीं संयोग है
हिन्दी परतंत्र नहीं स्वतंत्र है

हिन्दी शोक नहीं हर्ष है
हिन्दी शाप नहीं वरदान है
हिन्दी कायर नहीं वीर है
हिन्दी विषम नहीं सम है

हिन्दी असत्य नहीं सत्य है
हिन्दी शठ नहीं सज्जन है
हिन्दी लघु नहीं विराट है
हिन्दी ह्रास नहीं विकास है

हिन्दी रुष्ट नहीं प्रसन्न है
हिन्दी रंक नहीं राजा है
हिन्दी कटु नहीं मधुर है
हिन्दी पतन नहीं उत्थान है

हिन्दी आलस्य नहीं स्फूर्ति है
हिन्दी विधवा नहीं सधवा है
हिन्दी अपरिचित नहीं परिचित है
हिन्दी अपमान नहीं सम्मान है!

शिखा सिंह 'भारद्वाज' अलीगढ़ (उ.प्र.)

हिन्दी-वन्दना

नए बोल सिखाती है,मुझे ज्ञान कराती है ।
ए माँ भाषा तू ही मुझे सम्मान दिलाती है ।
नए बोल सिखाती है,...
भारत का है गौरव तू, चमकी बन भानु प्रभा ।
जन जन की है सौरभ तू,महकी हर दिशा दिशा ।
भारत-सुत में तू ही नया स्वाभिमान जगाती है ।
नए बोल सिखाती है,..
अ से अज्ञानी जन को,तू ज्ञ से ज्ञान कराए।
भ से भारत का जग में,तू ध से ध्वज फहराए ।
वर्णमाला ये तेरी नव-नव गीत बनाती है ।
नए बोल सिखाती है,...
संस्कृति में तूने लिया जन्म, जन-जन ने तुझे खिलाया ।
मैथिली बने संरक्षक तेरे,भारतेंदु ने जीना सिखाया ।
देवी सुभद्रा,प्रेम निराला तू कब से बनाती है ।
नए बोल सिखाती है,...
(महादेवी वर्मा, सुभद्रा कु.चौहान, प्रेमचन्द, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला)

'खड़ी बोली' तू बन कर पनपी,अब व्यापकता ही पाए ।
तेरे इस इतिहास को शुक्ल जन जन तक ही पहुँचाए ।
सरलता ही तेरी हमें अति सफल बनाती है ।
नए बोल सिखाती है ..,,
सखि नागरी संग में लेकर,लिपि तूने अपनी बनाई
ध्वनि रूप प्रमाणित करके,वैज्ञानिकता सिद्ध कराई ।
जो जैसा बोला,वैसा ही तू लिखना सिखाती है ।
नए बोल सिखाती है,....
अंग्रेजी भाषी मन को भी,अब भाने लगी है तू भी।
भारत-सीमा को पार कर, जग जाने लगी है तू भी ।
गुरु टैगोर का बन आशीष तू श्रद्धा जगाती है ।
नए बोल सिखाती है .....
लिखूँ,बोलूं तुझको ही गाऊँ,सीखूं तुझसे ही जीना सिखाऊँ ।
भले कुछ भी पढ़ूं,पढ़ाऊँ, बस तेरा ही वन्दन चाहूँ।
डी. कुमार को तू ही तो इक कवि बनाती है ।
नए बोल सिखाती है,...

डी. कुमार-अजस्र, बूंदी (राज.)

हिन्दी की बिंदी में शान

हिन्दी भाषा की बिंदी में शान।
तिरंगे के गौरव गाथा की आन।।
राजभाषा का ये पाती सम्मान।
राष्ट्रभाषा से मेरा भारत महान ।।

संस्कृत के मस्तक पर चमके।
सिंधी,पंजाबी चुनरी में दमके।।
बांग्ला,कोंकणी संग में थिरके।
राजस्थानी चूड़ियों में खनके ।।

लिपि देवनागरी रखती ध्यान।
स्वर व्यंजन में है इसकी शान।।
मात्राओं का हमें कराती ज्ञान।
शब्द भंडार है अनमोल खान।।

हिन्दी से राष्ट्र का नव निर्माण।
जन- जन का करती कल्याण।।
दुनिया में भारत की पहचान।
हिन्दी से होगा जग का उत्थान।।

कबीर, मीरा, तुलसी, रसखान।
सबने गाया हिन्दी का गुणगान।।
'रिखब' करता शारदे का ध्यान ।
पाता निशदिन अनुपम वरदान ।।

रिखब चन्द राँका 'कल्पेश'
'जयपुर

राष्ट्र भाषा की गरिमा

भारत माता के गौरव को,
फ़िर से वापस लाना है ।
इस धरती, इस आंगन में,
हिन्दी को सम्मान दिलाना है ।।

अंग्रेज़ी के बढ़ते कदमों पर,
अब हमको रोक लगाना है ।
हिन्दी बसी है सांसों में अपनी,
यह दुनिया को दिखलाना है ।।

अपने वतन में खोया हुआ,
वो अधिकार दिलाना है ।
विचारों के इस धर्म युद्ध में,
हिन्दी को ही जीताना है ।।

हिंदुस्तान में हिन्दी का अब,
फ़िर परचम लहराना है ।
साहित्य के उपवन में अब,
हिन्दी के फूल खिलाना है ।।

डॉ वासिफ क़ाज़ी, इंदौर (म.प्र.)

मेरी भाषा मेरी पहचान..!

सपनों और अरमानों की
आशाओं की खुशी भरी
मेहनतकश इंसानों को
जो लगती है खरी खरी

माँ का लाड़ पिता की डांट
दोस्त किताबों का उपहार
मेरी संस्कृति और संस्कार
वक्त की अब यही पुकार

हिन्दी एक वटवृक्ष सी
अमरबेल अंग्रेज़ी है
भाषा का अस्तित्व बचाना
अब बेहद जरूरी है

अक्षर अक्षर बूँद शहद की
शब्द शब्द में महक भरी
वाक्य जैसे शाख वृक्ष की
नख से शिख तक हरी हरी

हिन्दी नथनी, हिन्दी झुमकी
लाली काजल हिन्दी है
भारत माँ के मस्तक पर यह
कुमकुम वाली बिंदी है...!

डॉ वन्दना गुप्ता, उज्जैन (म.प्र.)

हिन्दी का पता

खोज रहा हूँ भारत में,हिन्दी का पता बता दो |
किस घर में रहती है,कोई तो मुझे बता दो ||
बचपन खोजा, गई जवानी, खोज रहा हूँ बुढ़ापे में |
जिंदा है या उठ गई अर्थी, सच तो कोई बता दो ||
न्यायधीश से जाकर पूछा, बोला कभी नहीं आई |
संसद में जाकर पूछा,है पागल इसे भगा दो ||
जलती चिता से जाकर पूछा,क्या हिन्दी जला रही हो ?
अंग्रेजी सेवक से बोली, इसको जीता जला दो ||
अंग्रेजी मंडप से पूछा, क्या हिन्दी को देखा है ?
इसको आया हिन्दी का दौरा,जूता कोई सूँघा दो ||
अस्पताल में खोजा जा कर, शायद कहीं पड़ी हो |
चिल्लाकर डॉक्टर बोला, इसे मुर्दा घर पहुँचा दो ||
हिमालय पर चढ़ चिल्लाया,हिन्दी आप कहां हो ?
सविधान में दबी हूँ बोली, मुझको मुक्त करा दो ||

अशोक महिश्वरे
गुलवा बालाघाट (म.प्र.)

हिन्दी- माथे की बिंदी

इस बिंदी में बसती कई भाषायें,बोली
सभी को अपने में समा़ये हुए पानी के जैसे मिलाये हुए
फिर भी अपनी डगर अलग बनाये हुए
भारत की संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक मूल्यों,
के अस्तित्व को बचाये हिन्दी
भारत की पहचान बनाये हिन्दी
तभी हिन्दुस्तानी कहलाते,
राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने की सबने मिलकर ठानी है,... !!!!
इसके पथ पर अग्रसर होने .
अंतरा शब्द्शक्ति परिवार ने हस्ताक्षर अपने
अंग्रेजी को छोड़ हिन्दी में बदल डालें हैं,...!!!
सभी का प्रयास यही
हिन्दी का हो विकास सही,...
मॉ हिन्दी का सम्मान करें,भारत का गुणगान करें,
अपने देश में ही नहीं,दूसरे देश में भी मान हो,...!!
अंतरा शब्द्शक्ति का साथ हो....!!
सभी रचनाकारों का हाथ हो
मॉ भारती का सम्मान हो,...!!
यही आवाम की आवाज हो ..
हिन्दी भारत मॉ के माथे की बिंदी,... !!!
भारत मॉ की शान रहे,
अंतरा शब्द्शक्ति का परिवार रहे .. !!!

आरती तिवारी, दिल्ली

भारत माता की शान

जनम लिया भारत में भारत की धरा निराली है,
अध्यात्म,ग्यान, साधु संतों की तपो भूमि,
पतित पावनी गंगा बहती यमुना की बात निराली है,
राम - कृष्ण यहाँ जनम लिए देव भूमि कहलाती है
जनम देने वाली माँ तो माँ है,गऊ माता की बात निराली है,
भारत माता की शान में सैकड़ों बोली, भाषाएँ,
हिन्दी भाषा की बात निराली है,
वेद,पुराण,रामायण,गीता भारत की सभ्यता,
संस्कृति बतलाती है,
कुरूक्षेत्र के मैदान में कृष्ण ने गीता का ग्यान दिया,
मर्यादा पुरुषोत्तम की बात निराली है,
माँ हिन्दी के सम्मान में कलम हाथ में हमने उठाई,
नहीं रूकेंगे, चलते रहेंगे,
अंतरा शब्द्शक्ति के साथ हाथ हमने हैं बढ़ाया,
माँ हिन्दी के सम्मान में
हर भारतीय मैदान में,
यह नारा प्रीति,अर्पण, और अंतराशब्द्शक्ति के परिवार का,
हिन्दी के मान का ।

प्रीति हर्ष, नागपुर(महा.)

हिन्दी भाषा

हिन्दी भाषा हमारी आन
हिन्दी हमारी शान है
हिन्दी भाषा हम बोलते हैं
हिन्दी हमारा अभिमान

हम हिंद देश के वासी हैं
हिन्दी हमारी माता है
हम जीते हैं शान से
हम सब हिन्दी भाषी हैं

हम सबको मिलजुल
रहना सिखाती है
बच्चे बूढ़ों सबको भाती
ये भाषा प्यारी प्यारी है

सबसे सरल मीठी है
ये हिन्दी भाषा हमारी
सबकी ज़ुबान पर
देखो मिश्री सी घुल जाती है

देश विदेश में जाके देखो
डंका इसका बजता है
फिर हम क्यों हिन्दी भाषी हो
हिन्दी बोलने से कतराते हैं

हिन्दी भाषा को हमको अपनी
बनाना है अब राष्ट्रभाषा
चलो क़दम बढाएँ आज
क़सम खाएँ हम सब मिल,...

अदिति रूसिया,वारासिवनी (म.प्र.)

हाँ... फिर एक बार

हाँ हिन्दी हूँ मैं
मैं वो हूँ जो कभी देश के
मस्तक पर विराजती थी
मैं वो हूँ जो माँ संस्कृत
की लाड़ली बिटिया थी
मैं वो हूँ जो भारत की प्रेयसी बन
उसके दिल में
धड़कन बनकर धड़कती थी
मैं वो हूँ जो दुल्हन बन
पूरे हिंदुस्तान में
चहकती फिरती थी
कितना खुश थी मैं
खुशियाँ मेरे इर्द -गिर्द घूमती थी
पर हाय ! ये नियति
ना जाने कब
मेरी खुशियों को नज़र लग गयी
जाने कब भारत का दिल
उस मुयीं अंग्रेजी पे आ गया
उसको सौतनियाँ बना डाला
देखते देखते मेरे घर
की स्वामिनी बन बैठी
मेरे बच्चों की कर्म लेखनी बन
मुझसे मेरी ममता छीन ले गयी
कभी जहाँ की स्वामिनी थी
अब वहाँ शर्म की प्रतीक बन गयी
लेकिन ना जाने क्यूँ
अब भी मेरी आँखें
एक उम्मीद की किरण को ढूंढती है
ना जाने क्यूँ
मुझे विश्वास है,मेरी परवरिश पर
मेरे प्रेम और मेरे बलिदान पर
एक दिन फिर
मेरी खुशियां लौट कर आएँगी
फिर से मैं देश की स्वामिनी
कहलाउंगी
फिर से भारत के
दिल पे राज़ करुँगी
हाँ।,... फिर से
फिर मैं हिन्दी इस देश के मस्तिष्क
पर विराजमान होकर
गर्वित महसूस करुँगी
हाँ।.. फिर एक बार

रिंकल शर्मा, दिल्ली

हिन्दी के महापुजारी

हिन्दी के फूलों में एक महाकवि सूरदास,
रामायण रच कर अमर हुए तुलसीदास,
दीपशिखा,हिमालय,नीरजा,निहार,रश्मिगीत,
महादेवी बन गयीं हिन्दी की छाया मनमीत,
क्या भूलूं क्या याद करूँ हरिवंशराय की मधुशाला,
ये हिन्दी का ही यश है बच्चन बन गये अमर उजाला,
सूर्यकांत नाम इनका बन गया हिन्दी का मतवाला,
रच अनामिका, राम की शक्ति पूजा परिचय है निराला,
वीर रस के श्रेष्ठ कवि रामधारी सिंह दिनकर हुए,
ये हिन्दी भाषा की महिमा उर्वशी रच अमर हुए,
देखो माया मरी न मन मरा मर- मर गये शरीर,
दार्शनिक विचारों का गौरव कवि संत कबीर,
रहिम, रसखान सुदर्शन नागार्जुन अटल बिहारी,
दुष्यंत, सुमित्रानंदन पंत हिन्दी के महापुजारी !

वसुंधरा राय, नागपुर (म.प्र.)

हमारी हिन्दी

हिन्दी है हम सबकी माता
संस्कृत है हिन्दी की माता
पद ऊँचा, है राष्ट्र भाषा।
मिलती है अपनी बहनों से।
अंग्रेजी भी उसकी बहना
हिन्दी परिचय है भारत का
जैसा तिरंगा झंडा प्यारा
जन गण मन का गीत सुहाना
'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तां हमारा'
हिन्दी प्यारी हम सबकी भाषा
गूँजे सदा धरा गगन पर
लिखते जाते हैं इसको जैसे
वचनों में भी वैसी आभा
स्वर व्यंजन की बात निराली
सब है भाषा विज्ञान से सम्मत ।
गौरव है हमको हिन्दी पर
विज्ञान,साहित्य से पूरित भाषा।

उर्मिला मेहता, इंदौर (म.प्र.)

हिन्दी मेरी भगिनी

कल एक मेले में मिली मुझे मेरी जीजी 'हिन्दी'
सफ़ेद साड़ी में लिपटी, माथे से गायब थी 'बिंदी'
मैंने पूछा- "जीजी ये क्या हुआ, कब हुआ, कैसे हुआ?"
तुम तो हो वेदों की जननी, पुराणों की वाणी
गीता का उपदेश हो तो रामायण की कहानी
फिर क्यों धूमिल है रंग तुम्हारा? श्रृंगार भी है फीका,
कहाँ गई वह तरुणी? जिसके आगे कोई न टिका।
जीजी ने भरी आह! और कहा-
छोटी तुझे क्या बताऊँ, क्या-क्या सुनाऊँ?
इस मेले में लगी है, बोली अनेक भाषाओं की
अंग्रेज़ी, चीनी, जापानी, फ्रेंच तो रूसी
सोचा मेरे बच्चे आएँगे और मुझे महँगे दामों में ले जाएँगे लेकिन,
अंग्रेज़ी बिकी सबसे ऊँचे दाम तो उर्दू को भी कोई न कोई ले गया
मुझे तो देखे बिना ही हर कोई आगे निकल गया।
लगता है,.. बच्चों को आती है शर्म मेरे साथ चलने से,
बड़ों को भी होती है मुश्किल मुझे लिखने से।
मैंने जीजी को गले से लगाया, थोड़ा पानी पिलाया और कहा-
"सुनो जीजी - जो पैसों में खरीदी जाए, तुम नहीं वो "जननी'
तुम तो हो इस जनमानस के दिलों की "भगिनी"।

प्रिया एस. प्रसाद 'प्रियायश', नोएडा

हिन्दी की दिव्यता

साधना सक्षम बने,जो व्यक्ति का जीवन बदल दे,
हिन्दी है भाषा ऐसी जिससे स्वयं ही वह श्रेष्ठ पथ पर चल दे,
जोड़ लें हिन्दी भाषा को आज जीवन साधना से,
मंत्र जप को हम भिगो लें लोक हित की भावना से,
आत्मसात कर अपनी भाषा को अकल्पित दिव्यता अनुभव करें,
देह-मन-अन्तःकरण को फिर प्रेम से कृतार्थ करें,
भाषा में शुचिता है,सादगी है,शांति है,
भाषा के ज्ञान से आत्मबल इतना जगाएं,
छोटे - छोटे जुगनुओं की चमक से रोशनी फैलाएं,
आसरा न ढूंढें भाषा हमें इतना आत्मबल दे,
साधना सक्षम बने जो व्यक्ति का जीवन बदल दे।

अंजलि वैद, दिल्ली

मातृभाषा

समृद्ध साहित्य हमारा है
क्यूँ ?औरों के हम ऋणी रहें।
क्यूँ ?अपनी माँ को बिसराकर
औरों की माँ के पाँव छुएँ।
अंधानुकरण में भूल गये
हिन्दी भारत का दर्पण है।
हिन्दी संग जन्मे धरिणी पर
हिन्दी में ही अंतिम तर्पण है।
है सृजन की शक्ति-भक्ति ये
भावों से भरी हुई अँजुरी।
है सहज अभिव्यक्ति मन की
ज्यूँ महके शब्द सुमन पंखुरी।
ज्ञान बढ़ाने को अपने सब
सीखें भिन्न बोली भाषा।
किंतु पायें लक्ष्य,हों गर्वित
अपनाकर निज मातृभाषा।
सूरज पश्चिम को बढ़ता जब
अस्तित्व डुबो देता अपना।
जागो ! हिन्दी को गले लगाकर
तुम तोड़ो भरम भरा सपना।
नवरस सिक्त मीठी बोली
जनमानस की अपनी भाषा
अखिल विश्व सिरमौर बने
बस यही बची अब अभिलाषा।।

वर्षा अग्रवाल

हिन्दी है आन मेरी

पहला अक्षर
"माँ"
पहली बोली
"हिन्दी"
पहला लिखा शब्द
"माँ सरस्वती"
फिर क्यों न बसे हृदय में
बन संगिनी ये बोली
हर हाव, हर भाव, हर रंग,
हर एहसास, हर खुशी, हर आँसू,
सब कह देती इतनी सहजता से
ये बन शब्दों की धारा
क्यों न फिर हो
प्यारी ये बोली
ये संगिनी हमारी
भाषा हमारी "हिन्दी"
चढ़े न रंग
इस बार कोई दूजा
कर ले यत्न कोई कितना
है ये भाषा मेरे दिल की
है ये पहचान मेरे होने की
रची बसी धड़कन
हिन्दी है आन मेरी
बहती लहू सी इस देह में
हिन्दी है शान मेरी।।

मीनाक्षी सुकुमारन
नोएडा (यू.पी)

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.) हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhasha.org

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-53-6

मूल्य- 65/-